कुछ और अच्छी किताबें

स्वयंप्रकाश

बाल साहित्य के सन्दर्भ में एक समस्या तो यह है कि बच्चों के विकास में साहित्य की भूमिका को हमारी शिक्षा व्यवस्था में अनदेखा किया गया है। दूसरे, शिक्षकों और माता-पिताओं की नजर में पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान ही सर्वोपरि बना हुआ है और तीसरी समस्या है, अच्छे बाल साहित्य की बच्चों की जरूरतों के अनुसार उपलब्धता का अभाव। थौथी समस्या बाल साहत्य पर विमर्श का अभाव। बाल साहित्य समीक्षा का स्तम्भ इस दिशा में छोटा-सा प्रयास है। जाने-माने कहानीकार स्वयंप्रकाश के लगातार मिल रहे सहयोग के हम आभारी हैं।

लेखक परिचय : हिन्दी के जाने-माने कहानीकार। संप्रतिः सेवानिवृत्ति के बाद पूर्णतः लेखन के लिए समर्पित।

सम्पर्क : 3/33, ग्रीन सिटी, ई-8, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-39 मध्यप्रदेश

छह अंधे आदमी और एक हाथी

यह एक प्रचलित लोककथा है जिसे कैरन बैकस्टाइन ने अपने निजी स्पर्श के साथ फिर लिखा है। आमतौर पर हाथी और छह अंधों की कहानी आंशिक सत्य को ही सम्पूर्ण सत्य मानने वालों पर व्यंग्य करने के लिए कही-सुनी जाती है। प्रसिद्ध व्यंग्यकार शरद जोशी ने अपने नाटक 'अंधों का हाथी' में इस लोककथा को समकालीन भारतीय राजनीतिक परिदृश्य पर घटित कर उसमें व्यंग्य और विद्रूप की सफल भावना की है।

प्रस्तुत पुनर्लेखन में लेखक ने इसे एक नया ही रूप प्रदान कर दिया है जो न केवल उनकी कल्पनाशीलता को प्रमाणित करता है, बल्कि लोककथाओं की प्रचुर सम्भावनामयता को भी उजागर करता है।

यहां हाथी एक राजकुमार के लिए मंगवाया गया है और उसे समझने की कोशिश करने वाले अंधे मूर्ख और जिद्दी नहीं, सदाशय और भोले हैं। उनके बोध की अपनी सीमाएं हैं, जैसी कि सबकी होती हैं, इसलिए वे अपने निष्कर्षों को लेकर अतिरिक्त आग्रही नहीं हैं। वे सब हाथी के 'अवलोकन' के बाद राजकुमार के पास जाते हैं जो उन्हें बताता है कि आप सही भी हैं और सही नहीं भी। क्योंकि हाथी को वास्तव में पूरी तरह जानने के लिए उसके सारे अंगों को एक साथ मिलाकर सोचना होगा।

यदि कहानी यहीं खत्म हो जाती तो इसमें कुछ भी नया या उल्लेखनीय नहीं होता। लेकिन कैरन बैकस्टाइन की कहानी यहां से आगे बढ़ती है और एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण बात कहती है। राजकुमार छह अंधों से कहता है, 'अब मैं आपको हाथी के बारे में एक और बात बताता हूं। हाथी की सवारी बड़ी अच्छी होती है। उस पर बैठकर अब आप घर जाएं।'

ये है असली रचनात्मकता और वैचारिकता और कलात्मकता। पहला तो यही कि कोई चीज देखने से नहीं, बरतने से ही समझ में आती है। दूसरा यह कि राजकुमार सदाशय और उत्सुक लेकिन नेत्रहीन और भोले लोगों की खिल्ली नहीं उड़ा रहा। वह उन्हें समकक्षता का सम्मान दे रहा है और अपनी सवारी के लिए मंगवाएं गए हाथी पर सवार होकर घर जाने की दावत दे रहा है।

इसमें एक तीसरी बात भी छिपी है।

मोटरकार मारुति-800 भी है और बीएमडब्ल्यू भी। दोनों आवागमन के लगभग समान रूप से सुगम साधन हैं। लेकिन बाजार अपने अहर्निश प्रचार के माध्यम से मारुति-800 वालों को दयनीय, बल्कि उपहास योग्य और बीएमडब्ल्यू वालों को सम्मानीय बल्कि ईर्ष्या योग्य सिद्ध करने और जंचाने में लगा है। वैश्विक पूंजीवाद

ने वस्तुओं का नाता आवश्यकता या उपयोगिता की बजाय हैसियत से जोड़ दिया है। ऐसी सूरत में यह कहानी हमें बता रही है कि हाथी भी हैसियत का सबूत नहीं, अंततः एक सवारी ही है जिस पर अंधे भी बैठ सकते हैं।

पुस्तक में चित्र ऐनी मित्रा के हैं और बहुत सुन्दर हैं। अनुवाद भी अच्छा है।

पेड़ का तना, तने में होटल

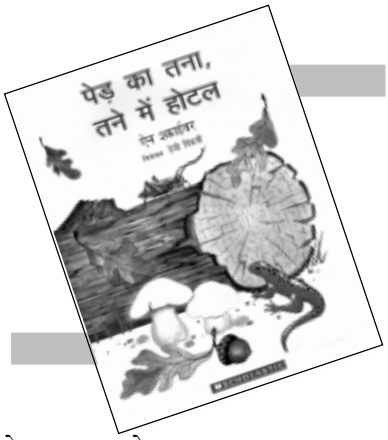

लेखक : ऐन श्क्राइवर,
प्रकाशक : स्कॉलस्टिक इण्डिया प्रा. लि. नई दिल्ली
मूल्य : तीस रुपये, पृष्ठ-24

ऐन श्क्राईबर की यह पुस्तक बताती है कि एक पेड़ गिर जाने के बाद भी कितने जीवों को भोजन और आश्रय देने में सक्षम है।

सौ साल पुराना एक पेड़ एक दिन गिर जाता है। कुछ रोज बाद वह सिर्फ एक तना रह जाता है। फिर कुछ रोज बाद तने में चींटियां लग जाती हैं। तने के भीतर चींटियों और कीटों की खटर-पटर सुनकर एक दिन वहां एक कठफोड़वा आ जाता है। तने पर फफूंद लग जाती है जो बाहर खुंभी का रूप ले लेती है। घोंघे भी तने में घर बना लेते हैं। कुछ रोज बाद एक सांप भी वहां रहने आ जाता है। तने पर काई जम जाती है जिसे खाने अन्य अनेक प्राणी भी आ जाते हैं। इस तरह धीरे-धीरे वह 'मृत पेड़' अनेक जीवों के लिए एक मुफ्त के होटल जैसा बन जाता है।

कहने की जरूरत नहीं है कि वृक्षों के उपकार को बगैर किसी नारेबाजी के मन में बैठा देने के लिए इस प्रकार की पुस्तकें काफी उपयोगी हो सकती हैं।

पुस्तक के सुन्दर चित्र डेबी पिंकनी ने बनाए हैं। अनुष्का भाटिया का अनुवाद भी ठीक है- सिवा दो स्थानों के। एक स्थान पर उन्होंने 'फफूंद' को 'फंगस' लिखा है और दूसरे स्थान पर 'काई' को 'मॉस'।

दहाड़नेवाली बिल्लियां

लेखक : किंबर्ली वाइनबर्जर
प्रकाशक : स्कॉलस्टिक इण्डिया प्रा. लि. नई दिल्ली
मूल्य : चालीस रुपये, पृष्ठ-36

किंबली वाइनबर्जर की इस पुस्तक में कोई कहानी नहीं अपितु शेर-चीता किस्म के वन्य पशुओं का सामान्य परिचय है। पुस्तक अपेक्षया बड़े बच्चों के लिए है।

पुस्तक में शेर और बाघ, तेंदुआ और जगुआर, चीते और काउगर को 'बड़ी बिल्लियां' कहा गया है। यह भारतीय समाज की अवधारणा के बिल्कुल अनुकूल नहीं है। यह जानते हुए भी कि ये पशु बिल्ली परिवार से संबंध रखते हैं, हम शेर-चीते को कभी बड़ी बिल्ली नहीं कह सकते। न उस तरह सोच सकते हैं। हमारे लिए वे भयप्रद और खूंखार जंगली जानवर ही रहे आएंगे। वे शौर्य और पराक्रम के प्रतीक चिन्ह भी हो सकते हैं। हम शेर को जंगल का राजा कहते हैं, बिल्ली या बड़ी बिल्ली नहीं। पुस्तक के लगभग हर पृष्ठ पर इन्हें 'बड़ी बिल्ली' या 'बड़ी बिल्लियां' कहा गया है। संभवतः यहां अनुवाद की नहीं, रूपान्तर की आवश्यकता थी।

जो जानकारी दी गई है वह भी बहुत शुष्क और किताबी है। मसलन 'बाघ का वजन 500 पौंड के आसपास होता है। नाक से पूंछ के कोने तक वह एक कार जितना लम्बा हो सकता है।' (पूंछ का कोना या पूंछ का सिरा ? और कौनसी कार ? और वजन पाउण्ड में क्यों ? और इस जानकारी का बच्चे क्या करेंगे ? क्या बड़े होकर उन्हें शेर या बाघ तौलने हैं ?) या फिर यह वाक्य देखिए- 'कहा जाता है कि अपने राजकाल में एशिया के एक सम्राट ने 9000 चीते पाले थे।'

(एशिया का सम्राट ? क्या इतिहास में कभी कोई एशिया का सम्राट रहा है ? यदि आशय 'एशिया के एक सम्राट' से है तो फिर वह सम्राट कैसे हुआ ? क्या यह 'एशियन एम्परर' का बुद्धिहीन अनुवाद तो नहीं ? लेकिन फिर नौ हजार पालतू चीते!! क्या नाम था इस सम्राट का ? कहां से मिली यह जानकारी ? क्या प्रमाण है इसका ? नौ हजार चीतों को रोज खिलाने के लिए मांस कहां से आता था ? क्या बच्चों को वन्य पशुओं का परिचय देते समय ऐसी ऊल-जलूल बातें लिखना जरूरी है ? या यह 'एशिया' के बारे में अंग्रेजों की किसी प्रकार की जातीय स्मृति- या जातीय विभ्रम- का प्रमाण ?)

अनुवादक यहां भी अनुष्का भाटिया ही हैं, लेकिन अनुवाद अच्छा नहीं है। प्रकाशक 'स्कॉलस्टिक' को सोचना चाहिए कि क्या अनुवादक के अलावा एक संपादक को नियुक्त करना जरूरी नहीं है ? ◆

सभी पुस्तकों के प्रकाशक- स्कॉलस्टिक इण्डिया प्रा. लि., नई दिल्ली